हिन्दी रचना
स्नातक — भाग - 1

प्रिय छात्र-छात्राओं!

आज हमलोग निबंध-लेखन पर विचार करेंगे। निबंध के स्वरूप और महत्त्व पर थोड़ी-सी सैद्धान्तिक पक्ष की बातें और विस्तार से लेखन के व्यावहारिक पहलुओं की चर्चा होगी। मुख्य रूप से हम इस बात पर गौर करेंगे कि हमारा लेखन कैसे उत्कृष्ट और सुन्दर हो।

आज जबकि वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का बोलबाला रहता है; कम लिखने और अधिक अंक प्राप्त करने की होड़ लगी रहती है, वहाँ दीर्घउत्तरीय प्रश्नों पर छात्र-छात्राओं का ध्यान कम रहता है और वे निबंध जैसे प्रश्नों को बिना किसी तैयारी के जैसे-तैसे हल कर लेना चाहते हैं। यदि हम निबंध के महत्त्व को भली-भाँति समझ लें तो न ~~[illegible]~~ हम इसे उपेक्षित करेंगे और न इसमें कम अंक आयेंगे। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह समझने की है कि निबंध के लिए कभी 25 तो कभी 30 अंक निर्धारित होते हैं। सिर्फ एक प्रश्न लिखकर इतने अंक प्राप्त करने की कला सीखनी चाहिए, क्योंकि निबंध असीमित विस्तार नहीं है बल्कि सीमित-सुसम्बद्ध रचना है। निबंध शब्द में 'नि' उपसर्ग है जिसका यहाँ अर्थ है — अच्छी तरह या भली-भाँति। बंध का अर्थ है — बाँधी गई वस्तु। अतः निबंध उस गद्य-रचना को कहते हैं जिसमें किसी विषय का वर्णन अथवा प्रतिपादन सीमित और सुसम्बद्ध रूप में किया गया हो।

छात्र-छात्राओं, सबसे पहले आपको यह समझ लेना है कि निबंध-लेखन एक कला है। किसी कला को मूर्त रूप देने के लिए तथा उसे अधिकाधिक आकर्षक और प्रभावशाली बनाने के लिए <u>सूक्ष्म निरीक्षण</u>, <u>गहन अध्ययन</u> और <u>चिंतन</u> की आवश्यकता होती है। सुनने में ये शब्द आपको भारी-भरकम लग सकते हैं, लेकिन एक बार रुचि जग जाने पर फिर इनको करने में कोई कठिनाई नहीं होती। आगे चलकर ये चीजें उठते-बैठते, आते-जाते अनायास होती जाती हैं। कैसे होगा यह सब?

सबसे पहले निरीक्षण को ही लें।..... तो आपको बिना कोई अतिरिक्त समय निकाले, सिर्फ आँख-कान खोलकर चीजों को

→

द्वारा हम विषय की एक छोटी-सी—पाँच-छह पंक्तियों की ऐसी भूमिका प्रस्तुत करते हैं जिससे शीर्षक का स्पष्टीकरण भी हो जाय और आगे क्या लिखा जाएगा, इसका भी ज्ञान हो जाय। इसमें निबंध के विषय के महत्व पर संक्षिप्त प्रकाश डालना उचित है। इसके अतिरिक्त आप सूक्ति या लोकोक्ति अथवा परिभाषा से भी निबंध का आरंभ कर सकते हैं। मुख्यत: आपको दो बातों का ध्यान रखना चाहिए। यह संक्षिप्त होना चाहिए और इसमें पाठक या परीक्षक को आकृष्ट करने का गुण होना चाहिए।

(ख) मध्य या प्रसार निबंध का मुख्य भाग है जिसमें विषय-विस्तारण होता है। इसमें निबंध-लेखक को अपना कथन तर्क, प्रमाण, लोकोक्ति, उद्धरण आदि से पुष्ट करते हुए प्रस्तुत करना चाहिए। उसकी सारी बातें सुसम्बद्ध और तथ्यपूर्ण हों। उसमें नदी की सहज धारा की तरह प्रवाह हो। आप मुख्य बातों या बिंदुओं के आधार पर इसका अनुच्छेदों में विभाजन भी कर सकते हैं। आपको इसका भी ध्यान रखना है कि अनावश्यक बातों का समावेश न हो। यदि आपको विरोधी पक्ष की बातों का प्रतिवाद करना है तो तथ्यों पर आधारित दृढ़ किंतु विनम्र उत्तर देना चाहिए। आप बिन्दुवार उत्तर भी दे सकते हैं।

(ग) अंत या उपसंहार भी भूमिका की तरह संक्षिप्त होना चाहिए। इसे प्रभावशाली भी होना चाहिए ताकि आप अपने तर्कों और तथ्यों का स्थायी छाप पाठक पर छोड़ सकें। उपसंहार को निष्कर्ष की तरह प्रस्तुत करना चाहिए। आप निबंध को सारांशित करते हुए कोई उद्धरण, लोकोक्ति या मंगल वाक्य भी दे सकते हैं। आप इसके द्वारा विषय के भविष्य का संकेत भी कर सकते हैं। अत: इसे कम महत्वपूर्ण मानकर, लिखने की हड़बड़ी में छोड़ना नहीं चाहिए—जैसी कि भूल अक्सर परीक्षार्थियों से हो जाती है।

छात्र-छात्राओं, निबंध के मुख्यत: 5 प्रकार होते हैं। ये पाँच प्रकार निम्नलिखित हैं—

(1) वर्णनात्मक निबंध — पर्वों या स्थानों की विशेषताओं, ऋतुओं, घटनाओं-दुर्घटनाओं, महापुरुषों की जीवनियों पर आधारित। जैसे होली, दीपावली, रेल-दुर्घटना, बाढ़, महात्मा गाँधी आदि। ऐसे निबंधों में वर्णन या

→

अच्छे निबंध के लिए निबंधकार में विभिन्न परिस्थितियों के प्रति जागरूकता होनी चाहिए तो यह भी सही है कि निबंध की आत्मा अभिव्यक्ति है। दूसरे शब्दों में कथ्य (भाव या विचार) यदि शरीर है तो अभिव्यक्ति प्राण। इस अभिव्यक्ति-पक्ष में मुख्य बात शैली की है। शैली का महत्व इसी से आँका जा सकता है कि इसे व्यक्तित्व का प्रतिरूप कहा गया है — Style is the man himself.
इसलिए छात्र-छात्राओं! आप अच्छी निबंध-रचनाओं का अध्ययन-विश्लेषण करें अवश्य, किंतु प्राप्त सामग्री को कच्चे माल की तरह ग्रहण करते हुए अपनी शैली में अभिव्यक्त करें। आपके व्यक्तित्व के अनुरूप आपकी शैली विकसित हो जाएगी। हाँ, विषय के अनुरूप आप शैलियों में परिवर्तन करें या एकाधिक शैलियों का यथास्थान प्रयोग करें। जैसे वर्णनात्मक शैली, भावात्मक शैली, अलंकृत शैली आदि।

इसके लिए क्या करना चाहिए? इसके लिए अभ्यास करना चाहिए। थोड़ा-सा समय निकालना चाहिए। आनन-फानन में निबटाने की आदत छोड़नी चाहिए। अधिकांश परीक्षार्थी थोड़ा-सा पढ़कर सीधे परीक्षा-कक्ष में ही निबंध लिखना शुरु कर देते हैं। इसके लिए अपेक्षित पूर्वाभ्यास नहीं करते। कोई प्रारूप या रूपरेखा नहीं बनाते। इसकी कोई योजना नहीं बनाते कि निबंध का आरंभ, मध्य और अन्त कैसे रखना है। निबंध को पहले एक-दो बार, जितना संभव हो, लिखना अवश्य चाहिए। यह ध्यान रहे कि निबंध आपकी विचारशीलता और अभिव्यक्ति को परखने का माध्यम है। और, आज के युग में यदि अपने विचारों को प्रकट करने शक्ति नहीं तो शिक्षा अधूरी है। छात्र-छात्राओं! यह ध्यान रहे कि परीक्षक को सिर्फ यह देखना है कि आप किसी विषय पर क्या सोचते हैं और उसे कैसे प्रस्तुत करते हैं। आपके ज्ञान को अभिव्यक्त करनेवाली भाषा शुद्ध और स्पष्ट होनी चाहिए। सरल, सुबोध और प्रसाद गुण-सम्पन्न भाषा परीक्षार्थियों के लिए आदर्श है। हाँ, दृष्टांतों, उद्धरणों, और सूक्तियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग कर सकते हैं। इससे निबंध अधिक प्रभावशाली और आकर्षक हो जाएगा।

किसी निबंध के तीन भाग होते हैं। आरंभ, मध्य और अंत। इसे आप भूमिका, प्रसार और उपसंहार भी कह सकते हैं।
(क) <u>भूमिका अथवा आरंभ</u> में उस विषय की प्रस्तावना होती है। प्रस्तावना के →

महसूस करना है। अपने आस-पास की वस्तुओं, दृश्यों, घटनाओं पर गौर करना है। उनपर थोड़ा सोचना है। हमारी चिर सहचरी प्रकृति मृत्यु-पर्यंत हमारे साथ रहती है। सूर्योदय की लालिमा, चिड़ियों का चहचहाना, रंग-बिरंगे फूलों का खिलना, वर्षा की झड़ी, भौंरों की गुंजार जैसे अनेक दृश्य हमें छूकर गुजर जाते हैं। हम कुछ पल ठहरकर उनका अनुभव करें। हमारे भीतर बहुत-से मनोभाव अभिव्यक्ति के लिए मचलते मिलेंगे। इसी तरह कुछ यात्राएँ अविस्मरणीय हो जाती हैं। हम नये-नये अनुभवों से समृद्ध होते हैं। इसी तरह तरंगायित नदियाँ, गरजते समुद्र, गगनचुंबी पहाड़, हिमाच्छादित शैल-शिखर हमारे निरीक्षण और चिंतन के विषय हैं। छात्र-छात्राओं, ये ही सब निबंध के भी विषय हैं। निबंध के विषय असीमित हैं; क्योंकि सामाजिक-राजनीतिक स्तर पर अनेक घटनाएँ घटती हैं। कुछ नयी परिस्थितियाँ पैदा होती रहती हैं। जैसे कोरोना जैसी महामारी अथवा कोई प्राकृतिक आपदा। इनसे जुड़े अनुभवों और पठित तथ्यों को सुसम्बद्ध रूप से एक निश्चित आकार में बाँधना ही निबंध है।

अब रही बात अध्ययन और अभ्यास की.... तो यह भी कोई मुश्किल नहीं है और इसे हम कई तरह से कर सकते हैं। उपलब्ध पत्र-पत्रिकाओं, अच्छी पुस्तकों और दूरदर्शन, कम्प्यूटर, मोबाइल जैसे साधनों का इस्तेमाल कर सकते हैं। इनके द्वारा राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की अनेक घटनाएँ हमारी जानकारी में शामिल होती हैं। कुछ निबंधों में आँकड़ों की जरूरत हो सकती है। वे सब भी आसानी से मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ श्रेष्ठ निबंधकारों की निबंध रचनाओं से हमें अलग-अलग दृष्टिकोण को समझने में मदद मिलती है। पहले से प्राप्त सूचनाओं में ही वृद्धि नहीं होती, अभिव्यक्ति की नयी शैलियों को भी सीखने का अवसर मिलता है। यह भी ध्यान रहे कि सीमितता और सुसम्बद्धता के अतिरिक्त आत्मीयता अथवा निजीपन भी अच्छे निबंध की पहचान होती है। अर्थात् प्राप्त सूचनाओं को आप अपने ढंग से, अपनी शैली में प्रस्तुत करते हैं। निबंध की बातें आपकी निजी बातें हो जाती हैं, उसमें अपनापन का पुट होता है, निजता होती है। यही शैली है।

इस प्रकार, आत्मतत्व की प्रधानता या निजीपन निबंध की जान है। अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा निबंध में यह सबसे अधिक होता है। यह निबंधकार के व्यक्तित्व के अनुरूप होता है। निबंध में लेखक बड़े अनौपचारिक रूप से सामने आता है। यह ठीक है कि

→

विवरण की प्रधानता होती है।

(2) विचारात्मक निबंध — इन निबंधों में गंभीर विषय होते हैं जिनमें चिन्तन-मनन की — बुद्धितत्त्व की प्रधानता होती है। साहस, उत्साह, प्रेम, श्रद्धा, स्वतंत्रता, समानता आदि निबंध इसी प्रकार के हैं।

(3) व्याख्यात्मक निबंध — नाम से ही ज़ाहिर है कि ऐसे निबंधों में व्याख्या अपेक्षित होती है। इसके अंतर्गत लोकोक्तियाँ अथवा महत्त्वपूर्ण कथनों पर आधारित निबंध आते हैं। जैसे — करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान, जाको राखे साइयां, मारि सकै ना कोय आदि।

(4) भावात्मक निबंध — इनमें भाव की प्रधानता होती है। निबंध-लेखक अपनी किसी अनुभूति को पाठकों तक पहुँचाना चाहता है। अपने हार्दिक आवेगों को भावुकतापूर्ण शैली में व्यक्त करता है। हिन्दी में ऐसे निबंध कम लिखे गए हैं और परीक्षाओं में भी कम ही पूछे गये हैं।

(5) कल्पनात्मक निबंध — ये कल्पना की सहायता से लिखे जाने वाले निबंध हैं, हालाँकि कल्पना की उड़ान मूल विषय के इर्द-गिर्द ही घूमती है। उदाहरण के लिए 'यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता' जैसे विषय पर निबंध लिखना हो तो निबंधकार यह कल्पना करता है कि वह भारत के प्रधानमंत्री के पद पर आसीन होकर क्या-क्या कदम उठाना उचित समझता है। वह अपनी कल्पना में देश के सुनहरे भविष्य को देखकर ऐसा करता है।

छात्र-छात्राओं! निबंध के उपर्युक्त प्रकारों में एकाधिक प्रकार के तत्त्व भी मिलते हैं। अर्थात् एक प्रकार के निबंध में यत्र-तत्र अन्य प्रकारों के तत्त्व भी मिलते हैं। जैसे भावात्मक निबंधों में विचार भी मिलते हैं। इसी तरह विचारात्मक निबंध बिल्कुल भावशून्य नहीं होते। सिर्फ प्रधानता को ध्यान में रखकर ये विभाजन किए गये हैं। वर्णनात्मक निबंधों में भी भाव और विचार यत्र-तत्र मिल जाते हैं। व्याख्यात्मक निबंधों के अन्तर्गत ही आलोचनात्मक निबंध आते हैं।

अंत में सिर्फ यही कहना आवश्यक प्रतीत होता है कि निबंध के विषय असीमित हैं किंतु निबंध असीमित विस्तार नहीं अपितु सीमित और सुव्यवस्थित रचना है। सरल, सुबोध और आत्मीयतापूर्ण भाषा-शैली निबंध के लिए अपेक्षित है — इसका आपको ध्यान रखना है।